डॉ. अर्पिता अग्रवाल

नदियों की पूजा को समर्पित भारतीय त्योहार

(पुष्करम, कुंभ, माघ और कार्तिक स्नान व मेले)

कुंभ मेला विशालतम धार्मिक उत्सवों में से एक है। कुंभ मेला सामाजिक सरोकारों से जुड़ा एक महासम्मेलन है। यहां संत समाज जल संरक्षण, जल प्रदूषण, पर्यावरण संरक्षण व पर्यावरण प्रदूषण जैसे विषयों पर मंथन करते हैं, अलख जगाते हैं।

अपने देश की नदियों के प्रति लगाव की संस्कृति के दर्शन नदियों के तट पर आयोजित विभिन्न मेलों में किए जा सकते हैं। हमारे देश के सांस्कृतिक विकास में इन मेलों का अभूतपूर्व योगदान रहा है। मान्यता है कि सभी नदियां भगवान ब्रह्मा द्वारा निर्मित हैं।

''पुष्करम'' भारत की नदियों का त्योहार है, जिसे तेलुगू में ''पुष्कर'' कहते हैं। इस त्योहार में नदियों के किनारे पुष्कर मेले का आयोजन होता है। भारत के मध्यकालीन इतिहास में ज्योतिष शास्त्र में इस त्योहार को मनाने का वर्णन है। पुष्करम में बृहस्पति, पुरूकर और नदी तीनों की दिव्यता भक्तों को प्लावित व पोषित करती है। दक्षिण भारत में प्रतिवर्ष नदियों के तट पर लगने वाले पुष्करम मेले में लाखों लोग एकत्रित होते हैं। हमारे देश में करोड़ों जलाशय हैं, इनका धार्मिक व सांस्कृतिक महत्व है। माना जाता है कि यह जलाशय पुष्कर (पुष्करा) ही पोषित करता है और धारण करता है। पुष्करम मेले का संबंध बृहस्पति गृह से है। बृहस्पति को देवताओं का गुरू माना जाता है। बृहस्पति अंधकार दूर करते हैं इसलिए शुद्ध व चमकीले गृह हैं। सामान्यतः पुष्कर ब्रह्मा जी के कमंडल में रहते हैं लेकिन बृहस्पति गृह पुष्कर के साथ रहना चाहते हैं इसलिए उन्होंने ब्रह्मा जी से प्रार्थना की कि वह पुष्कर को अपने साथ ले जाएं। लेकिन पुष्कर तैयार नहीं हुए। तब बृहस्पति की प्रार्थना पर यह तय हुआ कि पुष्कर उस समय बृहस्पति के साथ रहेंगे जब बृहस्पति एक नदी से दूसरी नदी में स्थापित हो रहे होगें। तब उस संक्रांति काल में पुष्कर नदी में प्रवेश करेंगे और जब बृहस्पति पूर्ण रूप से राशि के अनुसार संबंधित नदी में स्थापित हो जाएंगें, तब पुष्कर ब्रह्मा के कमंडल में वापिस लौट आएंगे। किंवदंती है कि पुष्कर (पुष्करा) एक ब्राह्मण थे, जिन्होंने कठोर तप करके भगवान शिव को प्रसन्न किया। भगवान शिव ने उन्हें आशीर्वाद दिया कि वह पानी में रह सकते हैं और नदियों को शुद्ध कर सकते हैं। पुष्करा का अर्थ है जो पोषित करता है।

प्रत्येक राशि से एक नदी जुड़ी है। 12 मुख्य नदियां 12 राशियों से जुड़ी हैं। जैसे गंगा नदी मेष राशि से, नर्मदा नदी वृषभ राशि से, यमुना नदी कर्क राशि से, सरस्वती नदी मिथुन राशि से, गोदावरी नदी सिंह राशि से, कृष्णा नदी कन्या राशि से, कावेरी नदी तुला राशि से, ताम्रपर्णी नदी व भीमा नदी दोनों ही नदियां वृश्चिक राशि से, ब्रह्मपुत्र नदी व तापी नदी धनु राशि से, तुंगभद्रा नदी मकर राशि से, सिंधु नदी कुंभ राशि से, प्राणहिता नदी मीन राशि से जुड़ी हैं। जब एक राशि से 2 नदियां जुड़ी होती हैं तब पुष्करम एक से अधिक नदियों के किनारे मनाया जाता है। इस मेले का आयोजन कुंभ मेले की तर्ज पर ही होता है।

प्रत्येक वर्ष उन 12 नदियों में से किसी एक नदी के तट पर पुष्करम मेला आयोजित होता है। बृहस्पति ग्रह 12 वर्ष में 12 राशियों में भ्रमण करते हुए पुनः पहली राशि में लौट आते हैं। इस प्रकार 12 वर्ष बाद पुनः उसी नदी के तट पर मेले का आयोजन होता है। 144 वर्ष बाद ''महापुष्करम'' का आयोजन होता है। बृहस्पति ग्रह को एक राशि से दूसरी राशि में स्थापित होने में 12 दिन लगते हैं। अतः यह त्योहार 12 दिन तक

मनाया जाता है। बृहस्पति एक वर्ष तक एक ही राशि में रहते हैं अतः पूरे वर्ष ही नदी में स्नान किया जाता है, लेकिन ब्रहस्पति के राशि में प्रवेश करने व निकलने के 12 दिनों में भारी भीड़ होती है। क्योंकि यह समय बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। मान्यता है कि इस समय नदियों का जल अत्यंत पवित्र हो जाता है और समस्त पापों को नष्ट कर देता है। शुरू के 12 दिन ''आदि पुष्करम'' व अंत के 12 दिन ''अंत्यपुष्करम'' कहलाते हैं। इस समय नदियों के तट पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन होता है। इस समय भक्त नदी के किनारे स्नान, दान, जप, अर्चना, ध्यान करते हैं।

भारत की बारह नदियों के तट पर सैकड़ों वर्षों से पुष्करम मेले आयोजित हो रहे हैं। 14 जुलाई 2015 को गोदावरी नदी के तट पर आंध्र प्रदेश और तेलंगाना में पुष्करम मेले की शुरूआत हुई थी। गोदावरी पुष्करम के समय बृहस्पति ने सिंह राशि में प्रवेश किया था। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार इस बार महापुष्करम का योग था। इस मेले को दक्षिण में कुंभ का दर्जा हासिल है। और दूर-दूर से श्रद्धालु पवित्र स्नान के लिए आते हैं। आंध्र प्रदेश के राजमुंदरी व तेलंगाना में करीमनगर जिले के धर्मपुरी में यह आयोजन हुआ। इस बार बृहस्पति (गुरू) एवं सूर्य दोनों ही सिंह राशि में प्रवेश कर रहे थे इसलिए पुष्करम के साथ ही गोदावरी नदी के उद्गम स्थल नासिक में व त्रयंबकेश्वर में कुंभ मेला भी आयोजित हुआ था। इस मेले को 'नासिक त्रयंबकम सिंहस्थ कुंभ मेला कहा गया। यह भी 12 वर्ष में एक बार आता है। माना जाता है कुंभ के समय एक दैवीय ऊर्जा (अमृत) नदी में रहती है। इसलिए नदी की पूजा इस समय फलदायी होती है। बड़े-बड़े धार्मिक संगठनों द्वारा इस समय नदी तट पर भव्य आयोजन किया जाता है, जिसमें बड़ी संख्या में लोग भाग लेते हैं। संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) ने भारतीय कुंभ मेले को मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर की सूची में स्थान दिया है। यह मेला विश्व का सबसे बड़ा धार्मिक उत्सव है जो सहिष्णुता और समग्रता को दर्शाता है।

आंध्र प्रदेश और तेलंगाना में गोदावरी के तट पर पुष्करम मेले का आयोजन किया जाता है।

प्रत्येक राशि से एक नदी जुड़ी है। 12 मुख्य नदियां 12 राशियों से जुड़ी हैं। जैसे गंगा नदी मेष राशि से, नर्मदा नदी वृषभ राशि से, यमुना नदी कर्क राशि से, सरस्वती नदी मिथुन राशि से, गोदावरी नदी सिंह राशि से, कृष्णा नदी कन्या राशि से, कावेरी नदी तुला राशि से, ताम्रपर्णी नदी व भीमा नदी दोनों ही नदियां वृश्चिक राशि से, ब्रह्मपुत्र नदी व तापी नदी धनु राशि से, तुंगभद्रा नदी मकर राशि से, सिंधु नदी कुंभ राशि से, प्राणहिता नदी मीन राशि से जुड़ी हैं। जब एक राशि से 2 नदियां जुड़ी होती हैं तब पुष्करम एक से अधिक नदियों के किनारे मनाया जाता है।

कुंभ मेला विशालतम धार्मिक उत्सवों में से एक है। कुंभ मेला सामाजिक सरोकारों से जुड़ा एक महासम्मेलन है। यहां संत समाज जल संरक्षण, जल प्रदूषण, पर्यावरण संरक्षण व पर्यावरण प्रदूषण जैसे विषयों पर मंथन करते हैं, अलख जगाते हैं। यहां संत समाज द्वारा स्त्री शिक्षा का महत्व समझाने, भ्रूण हत्या को जघन्य पाप बताने के साथ ही पौधे बांटने व पेड़ ना काटने का संकल्प भी लिया जाता है। कुंभ पर्व का लक्ष्य आत्म शुद्धि, विश्व बंधुत्व और विश्वकल्याण ही है। यह भारत के प्रसिद्ध व पवित्र चार स्थानों पर लगता है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार जब सुर और असुरों ने मिलकर समुद्र का मंथन किया तो उसके तल से तेरह अन्य बहुमूल्य रत्नों के अतिरिक्त एक अमृत कुंड भी प्रकट हुआ था। क्योंकि अमृत पीकर असुर सर्वशक्तिमान तथा अजेय हो जाते इसलिए इंद्र देवता के पुत्र जयंत अमृत कुंभ लेकर भाग गये। संयोगवश भागते समय अमृत की कुछ बूंदें हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन और नासिक नामक चारों स्थानों की पवित्र नदियों पर गिर गई। इस पावन घटना की स्मृति में इन चारों स्थानों पर प्रत्येक 12 वर्ष में कुंभ का आयोजन होता है। हरिद्वार और प्रयाग में 6 वर्ष बाद अर्ध कुंभ का भी आयोजन होता है। इसके अलावा तीर्थराज प्रयाग में गंगा व यमुना के संगम पर प्रतिवर्ष लगने वाले एक माह के माघ मेले की शुरूआत जनवरी माह में मकर संक्रांति से होती है।

वर्ष 2021 में हरिद्वार में कुंभ मेले का आयोजन हुआ था। वर्ष 2016 में जनवरी माह से हरिद्वार में अर्ध कुंभ का भी आयोजन हुआ था वर्ष 2013 में प्रयाग में कुंभ मेले का आयोजन हुआ था। इस बार यह महाकुंभ था, जो 144 वर्ष बाद आता है। वर्ष 2019 में प्रयाग में ही अर्ध कुंभ का आयोजन हुआ। कुंभ मेले की तिथियां खगोल गणनाओं के अनुसार सूर्य, चंद्रमा और बृहस्पति गृह की स्थितियों पर निर्भर होती हैं। वर्ष 2015 में नासिक में कुंभ मेले का आयोजन हुआ था। 22 अप्रैल वर्ष 2016 में मंदिरों के शहर, महाकाल की नगरी, उज्जैन में पवित्र क्षिप्रा नदी के तट यह मेला आरंभ हुआ था। कुंभ मेले में स्नान की कई मुख्य तिथियां होती हैं, जिन पर शाही स्नान होता है। करोड़ों लोग एकत्रित होते हैं। एक प्रकार से तंबुओं की नगरी नदी के तट पर बस जाती है। जगह-जगह कथाएं, भजन, पूजा-अर्चना होती रहती है। पंडाल सजे रहते हैं। अंतिम शाही स्नान के साथ ही यह नगरी उजड़ जाती है।

वर्ष 2016 में 12 अगस्त से 23 अगस्त तक कृष्णा नदी के तट पर पुष्करलू का आयोजन हुआ। नदी तट के मंदिरों, अनेक घाटों पर इस उत्सव की तैयारी की गई यह उत्सव नदियों के प्रति सम्मान की भावना दर्शाने की प्राचीन परंपरा को दिखाता है। नदी में तैरती रंग-बिरंगी नौकाओं, रंग-बिरंगे परिधान पहने विशाल जनसमूह, नावों पर लहराती पताकाएं सब कुछ अद्भुत लगता है। यूं तो अनेक घाटों पर आयोजन होता है पर विशेष तौर पर विजयवाड़ा शहर के घाटों पर हजारों लोग जुटते हैं। जन समूह का उल्लास देखते ही बनता है। भारत के दक्षिणी पठार की विशाल नदी कृष्णा है। महाराष्ट्र के पश्चिमी सागर तट के साथ फैली ऊंची पहाड़ियों सहयाद्री (पश्चिमी घाट) कहलाती हैं जो यूनेस्को के विश्व

महाकाल की नगरी, उज्जैन में पवित्र क्षिप्रा नदी के तट पर कुंभ मेले का आयोजन होता है।

विरासत स्थल में सम्मिलित है। करीब 1,600 किलोमीटर लंबी यह पहाड़ियां गुजरात से शुरू होकर महाराष्ट्र, कर्नाटक, होती हुई गोवा और केरल तक फैली हैं, और कन्याकुमार में इनका अंतिम छोर है। इन्हीं वनाच्छादित पहाड़ियों में से एक महाराष्ट्र की महाबलेश्वर पहाड़ियों से निकली कृष्णा नदी है जो पश्चिम से पूर्व की ओर भारतीय प्रायद्वीप के आर-पार बहती हुई बंगाल की खाड़ी में विलीन हो जाती है। इस पौराणिक एवं धार्मिक महत्व की नदी का मूल नाम कृष्णवेन्या या कृष्णवेन है। कृष्णा नदी महाराष्ट्र, कर्नाटक, तेलंगाना और आंध्र प्रदेश से होकर गुजरती है। कृष्णा नदी पर बना नागार्जुन सागर बांध भारत के आधुनिक विकास तीर्थ के रूप में प्रसिद्ध है। नागार्जुन सागर का नाम बौद्ध आचार्य नागार्जुन के नाम पर रखा गया है।

वर्ष 2017 में कावेरी नदी के तट पर पुष्करलु का आयोजन हुआ था। कर्नाटक और तमिलनाडु में यह उत्सव मनाया गया। यहां पर भी इस वर्ष महा पुष्करलु का योग था। अगला महा पुष्करलु वर्ष 2161 में होगा। कावेरी नदी के तट पर भव्य आयोजन हुआ था। करोड़ों लोग इस समय नदी तट पर एकत्र होते हैं। जहां पर भी यह आयोजन होते हैं वहां की राज्य सरकार विशेष प्रबंध करती है ताकि श्रद्धालुओं को कोई तकलीफ ना हो। कई घाटों का निर्माण किया जाता है और घाटों की साफ-सफाई, रखरखाव के लिए व्यवस्था की जाती है। कावेरी नदी भारत की एक मुख्य नदी है। यह नदी पूर्व की ओर बहकर बंगाल की खाड़ी में मिल जाती है। दक्षिण भारत में कर्नाटक के कुर्ग जनपद में सहयाद्रि की ब्रह्मगिरि पहाड़ी से निकली कावेरी नदी के उद्गम स्थल पर एक सरोवर है जो ''तलेकावेरी'' कहलाता है। सरोवर के किनारे ही देवी मंदिर में कावेरी नदी की उपासना देवी के रूप में होती है। पुष्करम उत्सव में कर्नाटक व तमिलनाडु के घाट सज-संवर जाते हैं। नदी के तट पर एकत्र हुए करोड़ों लोग नदी के किनारे स्थित मंदिरों में पूजा अर्चना करते हैं। नदी में स्नान करते हैं।

वर्ष 2018 में 12 अक्टूबर से 23 अक्टूबर तक भीमा नदी व ताम्रपर्णी नदी के तट पर पुष्करलु का आयोजन हुआ। इस समय बृहस्पति वृश्चिक राशि में प्रवेश कर रहे थे। भीमा नदी को पुराणों में भीमरथी नदी कहा गया है। भीमा नदी, कृष्णा नदी की सहायिका नदी और दक्षिण भारत की एक मुख्य नदी है। यह महाराष्ट्र, कर्नाटक, तेलंगाना राज्य से होकर बहती है। महाराष्ट्र राज्य में पुणे जिले में भीमाशंकर मंदिर के पास भीमाशंकर पहाड़ी में इसका उद्गम स्थल है। भीमा नदी दक्षिण पूर्व दिशा में बहती है। ''भीमाशंकर महादेव मंदिर'' बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक है यहां भगवान शिव भीमाशंकर महादेव नाम से पूजे जाते हैं यह नदी बहुत पवित्र मानी जाती है। इसमें स्नान का बहुत अधिक महत्व बताया जाता है। यह पितरों के श्राद्ध के लिए एक पवित्र नदी है। भीमा नदी ''भीमाशंकर वन्य अभयारण्य'' से होकर बहती है। भीमा नदी के किनारे बहुत से छोटे और बड़े मंदिर हैं जहां श्रद्धालु पुष्करम में पूजा अर्चना करते हैं। भीमा नदी कर्नाटक और तेलंगाना की सीमा के साथ बहते हुए रायचूर (कर्नाटक) के पास कृष्णा नदी में मिल जाती है।

दक्षिण भारत में अंतिम छोर पर प्रवाहित एक छोटी किंतु महत्वपूर्ण नदी, ताम्रपर्णी नदी है। इसका उल्लेख पुराणों में, तमिल साहित्य में व प्राचीन संस्कृत साहित्य में है। यह नदी तमिल संस्कृति और सभ्यता की द्योतक है। दक्षिण भारत में तमिलनाडु राज्य के पश्चिमी घाट में स्थित अगस्त्यकुड़म (अगस्ता कूट) की चोटी से निकली ताम्रपर्णी नदी तिरूनेलवेली जिले (तमिलनाडु) से निकलकर थूथुकुडी जिले से होती हुई पूर्व दिशा में बहती हुई मन्नार की खाड़ी में समाप्त हो जाती है। ताम्रपर्णी का जल सुंदर झरने बनाते हुए बहता है। तिरूनेलवेली जिले के पास कई घाटों पर पुष्कर स्नान के लिए विशेष व्यवस्था की जाती है। इस समय ताम्रपर्णी मंदिर में धार्मिक उत्सव का आयोजन होता है।

वर्ष 2019 में ब्रह्मपुत्र नदी के तट पर 5 नवंबर से 16 नवंबर तक जब बृहस्पति धनु राशि में प्रवेश करते हैं, असम में ब्रह्मपुत्र पुष्कर और सांस्कृतिक महोत्सव का आयोजन हुआ। इस समय सभी लोग अपने पूर्वजों की शांति के लिए नदी के तट पर हवन करते हैं। असम की सांस्कृति विरासत व कला का प्रदर्शन किया जाता है। असम के खानपान का विविध रूप भी देखने को मिलता है। कई बड़ी-बड़ी संस्थाओं द्वारा मुफ्त में पूरे दिन भोजन की व्यवस्था भी की जाती है। एक आलौकिक दृश्य नदी के तट पर उपस्थित होता है जहां जगह-जगह उठता हवन का धुआं, लोगों की भीड़, विभिन्न गतिविधियों में लगे हुए लोगों की श्रद्धा को देखना मन को सुकून देता है। ब्रह्मपुत्र नदी वास्तव में एक नद है। यह पुरूषवाचक शब्द है जिसका अर्थ है ''ब्रह्मा का पुत्र''। ब्रह्मपुत्र नदी कई देशों से होकर अपनी यात्रा पूरी करती है इसे अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग नामों से पुकारा जाता है। हिमालयी क्षेत्र से निकली

दक्षिण भारत में अंतिम छोर पर प्रवाहित एक छोटी किंतु महत्वपूर्ण नदी, ताम्रपर्णी नदी है। इसका उल्लेख पुराणों में, तमिल साहित्य में व प्राचीन संस्कृत साहित्य में है। यह नदी तमिल संस्कृति और सभ्यता की द्योतक है। दक्षिण भारत में तमिलनाडु राज्य के पश्चिमी घाट में स्थित अगस्त्यकुड़म (अगस्ता कूट) की चोटी से निकली ताम्रपर्णी नदी तिरूनेलवेली जिले (तमिलनाडु) से निकलकर थूथुकुडी जिले से होती हुई पूर्व दिशा में बहती हुई मन्नार की खाड़ी में समाप्त हो जाती है। ताम्रपर्णी का जल सुंदर झरने बनाते हुए बहता है। तिरूनेलवेली जिले के पास कई घाटों पर पुष्कर स्नान के लिए विशेष व्यवस्था की जाती है। इस समय ताम्रपर्णी मंदिर में धार्मिक उत्सव का आयोजन होता है।

दक्षिण भारत में अंतिम छोर पर प्रवाहित ताम्रपर्णी नदी के घाटों पर भी पुष्कर स्नान के लिए विशेष व्यवस्था की जाती है।

भारत के उत्तर पूर्व की मुख्य नदी ब्रह्मपुत्र विशाल जल की स्वामिनी है। यह समुद्र का एहसास कराती है। यह तिब्बत में अपने उद्गम स्थान से पूर्व की ओर बहती है। तिब्बत में कैलाश पर्वत के नीचे प्रसिद्ध मानसरोवर झील के निकट 5200 मीटर (17060 फीट) की ऊंचाई पर एक ग्लेशियर से इसका जन्म हुआ है। यहां इसे 'सांगपो' नाम से पुकारते हैं। ब्रह्मपुत्र नदी की सुंदरता और बाढ़ आने पर इसकी भयानकता दोनों ने ही आदिकाल से कवियों को प्रेरित किया है। ब्रह्मपुत्र नदी अपने प्रवाह पथ में कई धाराओं में बंट कर बीच-बीच में छोटे-छोटे द्वीपों का निर्माण करती है। नदी के बीच स्थित माजुली द्वीप असम में है। यह जैव विविधता से भरपूर स्थान और पक्षी प्रेमियों की पसंदीदा व एक सुंदर जगह है। एक अन्य मयूर द्वीप भी ब्रह्मपुत्र नदी में स्थित है। ब्रह्मपुत्र में खूबसूरत डॉल्फिन देखने भी सैलानी पहुचंते हैं। अब माजुली द्वीप पर खतरे के बादल मंडरा रहे हैं इसका आकार पहले से बहुत कम हो गया है क्योंकि ब्रह्मपुत्र नदी के पानी से इस द्वीप का कटाव हो रहा है। लगभग हर साल ब्रह्मपुत्र में बाढ़ आती है जिससे भारी नुकसान होता है। असम में स्थित काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान में भी बाढ़ का पानी वहां के जीव-जंतुओं पर कहर बनकर टूटता है।

वर्ष 2019 में ही तापी नदी के तट पर 29 मार्च से 9 अप्रैल तक पुष्करम मनाया गया। इस समय भी बृहस्पति धनु राशि में थे। बृहस्पति ग्रह कभी-कभी वक्री होते हैं तो वह अपनी पिछली राशि में प्रवेश कर जाते हैं। वर्ष 2019 में बृहस्पति ग्रह पहली बार जब धनु राशि में आये तब तापी नदी के तट पर पुष्करम का आयोजन हुआ और फिर वह पहली राशि वृश्चिक में लौट गये। 5 नवंबर, 2019 को बृहस्पति पुनः धनु राशि में आये इसलिए ब्रह्मपुत्र नदी के तट पर यह उत्सव 5 नवंबर से आरंभ हुआ।

वर्ष 2020 में तुंगभद्रा नदी के तट पर जब बृहस्पति ने मकर राशि में प्रवेश किया तब पुष्कर का आयोजन हुआ। तुंगभद्रा नदी दक्षिण भारत की एक पवित्र नदी है और कृष्णा नदी की सहायक नदी है। रामायण महाकाव्य में तुंगभद्रा नदी 'पंपा' नदी के नाम से जानी जाती है। कर्नाटक में पश्चिमी घाट में तुंगा और भद्रा नदियां जन्म लेती हैं। यह स्थल तुंगा मूल या गंगा मूल कहलाता है। पश्चिमी घाट की पूर्वी ढाल से बहती हुई यह दोनों नदियां 610 मीटर (2001 फीट) की ऊंचाई पर 'कूडली' नामक स्थान पर मिलकर तुंगभद्रा को जन्म देती है। तुंगभद्रा नदी के किनारे कई महत्वपूर्ण शहर बसे हैं। हंपी इसी नदी के किनारे स्थित है। हंपी के पास ही अनकासमुद्रम में पक्षी अभ्यारणय भी है। हंपी के महलों, मंदिरों और शाही इमारतों के अवशेष अपने समय की भव्यता व आर्थिक संपन्नता की याद दिलाते हैं। भारत सरकार द्वारा जारी नए नोटों की श्रृंखला में रु. 50 के नोट पर हंपी के रथ की आकृति छपी है। हंपी को रामायण का किष्किंधा क्षेत्र कहा जाता है। यह उत्सव 20 नवंबर से 1 दिसंबर तक कर्नाटक, आंध्र प्रदेश और तेलंगाना में तुंगभद्रा नदी के तट पर मनाया गया।

वर्ष 2021 में सिंधु नदी के तट पर जब ब्रहस्पति ने कुंभ में प्रवेश किया, तब पुष्कर का आयोजन हुआ। यह उत्सव वर्ष 2009 में 19 दिसंबर में मनाया गया था। सिंधु नदी मानसरोवर झील के पास तिब्बत के पठार से निकली है। हिमालय की कारकोरम श्रेणी से गुजरते हुए सिंधु नदी गहरी घाटी बनाती है। भारत के जम्मू कश्मीर के लद्दाख क्षेत्र से बहने वाली सिंधु नदी संसार की विशाल नदियों में से एक है। सिंधु नदी लद्दाख के ऊंचे नगर लेह को घेरकर बहती है। सिंधु नदी का भारत के लिए बड़ा महत्व है। सिंधु के तट पर आरंभिक सभ्यता विकसित हुई थी। प्राचीन सिंधु घाटी सभ्यता के अवशेष मोहनजोदड़ों और हड़प्पा में आज भी मौजूद हैं। सिंधु नदी ने अपने रास्ते में बहुत बदलाव किए हैं और लगातार पश्चिम की ओर सरकती गई है। यह आयोजन 6 से 17 अप्रैल तक लद्दाख और लेह में किया गया।

वर्ष 2022 में प्राणहिता नदी के तट पर पुष्कर मेले का आयोजन हुआ। इस समय बृहस्पति ने मीन राशि में प्रवेश किया। प्राणहिता नदी गोदावरी नदी की सहायक नदी है। गोदावरी नदी के जल का 40% भाग प्राणहिता नदी से ही आता है। वैनगंगा एवं वरदा नदियों के सम्मिलित प्रवाह को प्राणहिता नदी कहते हैं। यह नदी महाराष्ट्र में गाड़चिरौली जिले की सीमा व तेलंगाना के आदिलाबाद जिले की सीमा पर बहती है। तेलंगाना में स्थित कालेश्वरम में जहां प्राणहिता नदी, गोदावरी नदी से मिलती है, वहां प्राचीन व प्रसिद्ध कालेश्वर मुक्तेश्वर स्वामी मंदिर है। यह भगवान शिव को समर्पित मंदिर है। यहीं पुष्करलु में दूर-दूर से लोग प्राणहिता नदी में स्नान कर भगवान का आशीर्वाद पाते हैं और पापों से मुक्त होते हैं। यह आयोजन 13 अप्रैल से 24 अप्रैल तक हुआ।

2023 में जब बृहस्पति मेष राशि में प्रवेश करेंगे तब गंगा नदी के तट पर पुष्करम का आयोजन होगा। यह आयोजन मुख्यतः गंगोत्री, प्रयाग, हरिद्वार, गंगा सागर में होगा। गंगा हिमालय के गंगोत्री ग्लेशियर के नीचे स्थित गोमुख से निकली है। गंगा नदी की अनेक सहायक नदियां हैं। गंगा नदी उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, पश्चिमी बंगाल से होकर बहती है। अनेक प्रसद्धि तीर्थ स्थल गंगा नदी के तट पर स्थित हैं। प्रयागराज में गंगा नदी का यमुना नदी व अदृश्य सरस्वती नदी से संगम बहुत प्रसिद्ध है। यहां हर 12 वर्ष में कुंभ मेले का आयोजन होता है, 6 वर्ष बाद अर्ध कुंभ का आयोजन होता है,

गंगा यमुना और सरस्वती नदी के संगम पर प्रयाग में पुष्करम स्नान किया जाता है।

साथ ही प्रति वर्ष जनवरी माह में मकर सक्रांति से माघ मेले का आयोजन होता है। गंगा नदी हमारी राष्ट्रीय नदी है। हमारे जीवन में गंगाजल का बहुत महत्व है। सभी धार्मिक संस्कारों में इसका प्रयोग होता है।

वर्ष 2024 में जब बृहस्पति वृषभ राशि में प्रवेश करेंगे नर्मदा नदी के तट पर पुष्करम का आयोजन होगा। यह आयोजन 2 मई से 13 मई के बीच होगा। सतपुड़ा, मैकल तथा विंध्य पर्वत श्रृंखला की संधि पर सुरम्य नील वादियों में बसा अमरकंटक छत्तीसगढ़ में स्थित एक अनुपम स्थल है। यहीं से नर्मदा नदी निकली है। नर्मदा नदी मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और गुजरात में बहती है। 'ओंकारेश्वर' नर्मदा नदी के किनारे सबसे महान तथा पवित्र स्थान है।

वर्ष 2024 में जब बृहस्पति वृषभ राशि में प्रवेश करेंगे नर्मदा नदी के तट पर पुष्करम का आयोजन होगा। यह आयोजन 2 मई से 13 मई के बीच होगा। सतपुड़ा, मैकल तथा विंध्य पर्वत श्रृंखला की संधि पर सुरम्य नील वादियों में बसा अमरकंटक छत्तीसगढ़ में स्थित एक अनुपम स्थल है। यहीं से नर्मदा नदी निकली है। नर्मदा नदी मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और गुजरात में बहती है। 'ओंकारेश्वर' नर्मदा नदी के किनारे सबसे महान तथा पवित्र स्थान है। यह द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक है। नर्मदा नदी के तट पर स्थित महेश्वर का महत्व पुरातन समय से है। यहां हाथ से बनी आरामदायक माहेश्वरी साड़ियां बनती हैं। महेश्वर महारानी अहिल्याबाई होल्कर की राजधानी थी। वह बड़ी शिव भक्त थी। उन्होंने अनेक शिव मंदिरों का जीर्णोद्धार कराया था। नर्मदा नदी पूर्व से पश्चिम की ओर 1312 किलोमीटर की यात्रा करते हुए गुजरात के पास अरब सागर से जा मिलती है। पुष्करम का स्नान अमरकंटक में करना ज्यादा पवित्र माना जाता है। ओंकारेश्वर, महेश्वर आदि अन्य स्थलों पर भी पुष्करम का स्नान किया जाता है।

वर्ष 2025 में जब बृहस्पति मिथुन राशि में प्रवेश करेंगे तब सरस्वती नदी के तट पर पुष्करम का आयोजन होगा यह आयोजन 15 मई से 26 मई के बीच होगा। प्राचीन ग्रंथ ऋग्वेद में वर्णित नदियों में सरस्वती नदी का प्रमुख स्थान है। सरस्वती नदी का उद्गम हरियाणा के यमुनानगर जिले में स्थित आदि बद्री के पास माना जाता है। यहीं सरस्वती नदी हिमाचल के पहाड़ों से निकलकर सबसे पहले मैदान में प्रवेश करती है। सरस्वती नदी सतह पर यहां नहीं दिखती लेकिन पास में एक कुंड में पानी है जिसे लोग सरस्वती नदी मानकर पूजा करते हैं। मान्यता है सरस्वती नदी हरियाणा के 7 जिलों व राजस्थान के 7 जिलों से होते हुए नागौर के पास गुजरात में प्रवेश करती थी और गुजरात के 6 जिलों से गुजरते हुए पाकिस्तान होते हुए अरब सागर तक बहती थी। सरस्वती नदी तो हजारों साल पहले लुप्त हो गई। लेकन इनके मार्ग में आज भी मीठे पानी के स्रोत पाए जाते हैं। माना जाता है सरस्वती नदी अदृश्य रूप से गंगा और यमुना के साथ त्रिवेणी संगम में प्रयाग में मिलती हैं। इसलिए प्रयाग में ही सरस्वती पुष्करम का स्नान किया जाता है।

वर्ष 2026 में जब बृहस्पति कर्क राशि में प्रवेश करेंगे तब यमुना नदी के तट पर पुष्करम का आयोजन होगा। यह आयोजन उत्तराखंड, हरियाणा, उत्तर प्रदेश में जहां-जहां से यमुना गुजरती है, वहां पर होगा। मुख्य स्थल मथुरा, प्रयाग, कालपी रहेंगे। यह आयोजन 2 से 13 जून तक होगा। उत्तराखंड के उत्तरकाशी जिले में हिमालय की एक चोटी 'बंदरपुच्छ' है, जिसे सुमेरू पर्वत भी कहते हैं, स्थित है। यह चोटी बहुत ऊंची है लगभग 6096 मीटर (19980 फीट) ऊंची। इसके एक भाग का नाम 'कालिंद' है। यहीं से यमुना नदी निकलती है। यमुना की धारा पहाड़ी ढलानों पर अत्यंत तीव्रता पूर्वक उतरती हुई यमुनोत्री की घाटी में पहुंचती है। यह घाटी लगभग 3048 मीटर (9987 फीट) की ऊंचाई पर स्थित है। यहां यमुना जी का एक छोटा सा मंदिर है। निरंतर बहती यमुना नदी देहरादून के निकट डाकपत्थर नामक स्थान पर मैदानों में प्रवेश करती है। यमुना हरियाणा से होते हुए नई दिल्ली तक पहुंचती है। आगे बहती यमुना आगरा, इटावा, कालपी से गुजरती हुई तीर्थराज प्रयाग में गंगा में विलय हो जाती है।

वर्ष 2027 में पुनः गोदावरी नदी के तट पर पुष्कर मेले का आयोजन किया जाएगा। नदियों के किनारों पर त्योहारों और मेलों की कथा अधूरी रहेगी यदि उत्तर प्रदेश के गढ़मुक्तेश्वर में गंगा के किनारे मनाए जाने वाले कार्तिक मेले का जिक्र ना किया जाए। गढ़मुक्तेश्वर में पूरे कार्तिक माास में आस-पास के जिले के मुख्यतः मेरठ, बुलंदशहर, हापुड़, गाजियाबाद आदि के निवासी बड़ी धूमधाम से मेले में सम्मिलित होते हैं। मुख्य स्नान कार्तिक पूर्णिमा को मनाया जाता है। आस-पास के ग्रामों के ग्रामीण नागरिक अपनी-अपनी बैल गाड़ियों व ट्रैक्टरों पर महीनेभर का राशन पानी लेकर सपरिवार वहां स्नान को जाते हैं। गढ़मुक्तेश्वर में 108 सीढ़ियों वाला गंगा मंदिर है जिसकी श्रद्धा पूर्वक पूजा नर-नारी करते हैं। ऐसा मानना है कि यहां स्नान करने से गंगा मां मुक्ति देती हैं। इसीलिए इसका नाम गढ़मुक्तेश्वर प्रचलित हो गया है। यहां अनेक मंदिर भी हैं। गढ़ से मुरादाबाद जाते समय जो एक बहुत बड़ा पुल है उसका नाम पहले ब्रिज हाल्ट (Bridge Halt) प्रचलित था। कालांतर में इस स्थान में अनेक घाट बन गए, धर्मशालाएं बन गई और यात्रियों के ठहरने की लंबी चौड़ी व्यवस्था हो गई। अतः इसका नाम बृजघाट हो गया। पूर्णिमा का स्नान करके तीर्थयात्री वापस अपनी यात्रा पर लौट पड़ते हैं।

संपर्क करें:
डॉ. अर्पिता अग्रवाल
'काकली भवन' 120-B साकेत,
सिविल लाइंस,
सेन्ट ल्यूक अस्पताल के सामने,
मेरठ-250003 (उ.प्र.)
फोन न. 0121-2641029, 2643029